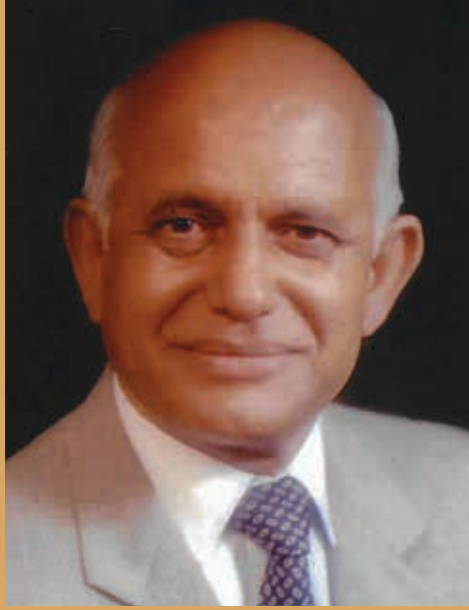


पद्मश्री
डॉ. जय पाल सिंह



1930 - 1997

Padma Shri
Dr. Jai Pal Singh

Padma Shri
Dr. Jai Pal Singh
1930-1997

Published by Harsh Singh Lohit, April 2023
harshlohit@gmail.com. 9810032223
Typeset by Ram Das Lal
Printed at Saurabh Printers NOIDA, Uttar Pradesh

पद्मश्री
डॉ. जय पाल सिंह



Dr. Jai Pal Singh.
Medical Superintendent Dr RML Hospital, New Delhi. 1986-1989.



Risaldar, 14 Murray's Jat Lancers.



1866. Sowar Balwant Singh of 14 Murray's Jat Lancers was awarded Indian Order of Merit for bravery in Battle of Dewangiri, Nepal.
Ancestor of Jai Pal Singh



1891 Wordi Major Umrao Singh 14 Murray's Jat Lancers wears the Afghanistan Medal, 1879
Ancestor of Jai Pal Singh



Kartari Devi and Dr. Yogendra Singh parents of Jai Pal Singh, c. 1940

Dr. Yogendra Singh graduated in 1924 from the same medical college in Agra as his son Jai Pal in 1952, then known as Agra Medical School that trained Indians as Licensed Medical Practitioners for the British Army. Yogendra Singh stayed all over India in Army Cantonments ranging from Zhob and Quetta, Jabajpur, Lucknow and Bangalore. His service was cut short due to ill health, and he was pensioned early, a welcome source of income for Kartari Devi till she lived.

Yogendra Singh passed away in 1953 at 52, just after his son completed his MBBS.



Kartari Devi, mother of Jai Pal Singh. Village Bharangpur, District Hapur, Uttar Pradesh, 1983

The sole survivor of 6 children, Jai Pal was the light of her life.

Jai Pal remembered with great emotion and gratitude the herculean efforts she made to save money for his medical education by scrounging on herself and selling produce from her small 5-acre farm. A true karmayogin, she was an inspiration for the village and shared her enormous love with all around her.



1991 Padma Shri medal awarded by President of India to Dr. Jai Pal Singh for his meritorious contributions to the medical profession

Contents

डॉक्टर जय पाल सिंह की जीवनी	1
Life history of Dr. Jai Pal Singh	12
Photographs / फोटो	21

डॉक्टर जय पाल सिंह

डॉक्टर जयपाल सिंह ने शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता के प्रति असीम जोश था। अपने निजी जीवन और कैरियर में इस तरह के उद्यम और परिणाम देने वाली उपलब्धियों के प्रचुर लाभों को वह भलीभांति जानते थे। इस तथ्य ने उन्हें सीखने और सिखाने के लिए प्रेरित किया; युवा पीढ़ी को आत्मविकास और सांसारिक सफलता के मार्ग के रूप में शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित किया। अपने कार्य के प्रति दृढ़ नैतिकता और उद्यमशीलता (की भावना); अपने कामों की बारीकियों पर ध्यान देना; परिवार, सम्बंधियों और मित्रों के प्रति उनका अनुराग (और आजीवन प्रतिबद्धता); कठिन से कठिन परिस्थितियों से पार पाने की अपनी क्षमताओं में उनका दृढ़ विश्वास – ये उनके ऐसे विशिष्ट गुण थे, जिन्होंने उन्हें ऐसी उपलब्धियां हासिल करने वाला सफल व्यक्ति बनाया, जैसे वे थे। जयपाल सिंह पश्चिमी उत्तर प्रदेश के उद्यमशील एवं परिश्रमी कृषक समुदाय से आते थे, और यही पृष्ठभूमि उनकी विश्वदृष्टि के विकास में महत्वपूर्ण कारक रही।

ग्रामीण जन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता हर दृष्टि से उल्लेखनीय थी— 1992–95 के संक्षिप्त दौर में जब (अनच्छा से) प्राइवेट प्रैक्टिस शुरू की तो उन्होंने सैकड़ों गरीबों, बहुधा देहात से आने वालों के ऑपरेशन बिना कोई पैसा लिये किये। उनके कैरियर के दौरान दसियों हजार लोग देहाती इलाकों से विपत्ति में सहायता पाने के लिए – न केवल चिकित्सकीय सहायता बल्कि निजी संकट में भी – उनके पास आते थे और ऐसे लोगों को – चाहे उनका घर हो या आफिस – कभी निराश नहीं लौटना पड़ा।

जीवन

13 मई 1930 को जन्मे जयपाल सिंह ने चिकित्सा विज्ञान में स्नातक डिग्री विशिष्ट अकादमिक रिकॉर्ड के साथ 1952 में सरोजिनी नायडू मेडिकल कालेज, आगरा (उत्तर प्रदेश), से हासिल की – उसी प्रतिष्ठित संस्थान से, जहां से उनके पिता (स्व० डा. योगेन्द्र सिंह, जो तत्कालीन ब्रिटिश आर्मी में रहे) ने एक पीढ़ी पहले मेडिकल स्नातक की डिग्री ली थी। एक उत्कृष्ट स्वर्ण पदक छात्र, जय पाल 1951–52 में कॉलेज के स्पोर्ट्स कैप्टन और कॉलेज हॉकी, फुटबॉल, टेनिस टीम के सदस्य और यूनिवर्सिटी थिएटर क्लब के नेता रहे। 1955 में शल्य चिकित्सा (Surgery) में स्नातकोत्तर शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने लगभग 40 से भी अधिक वर्षों तक

दिल्ली और आस-पास के क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण एवं सहानुभूतिशील रोगी सेवा-श्रुषा तथा हजारों लोगों को चिकित्सा शिक्षा प्रदान की। उन्होंने आम जनता के लाभार्थ शल्य चिकित्सा शोध के क्षेत्र में नई दिशाएं खोलीं एवं पाश्चात्य जगत में प्रवास के दौरान जिस औषधि-विज्ञान और शल्य चिकित्सा तकनीक का प्रयोग किया था, उसका प्रयोग भारतीय समाज की चिकित्सा समस्याओं के समाधान हेतु समकालीन संदर्भों में संशोधित तथा परिवर्धित रूप में किया।

अपने चार दशक लम्बे मेडिकल कैरियर के दौरान डा. सिंह 1968 में राष्ट्रमंडल सदस्य के रूप में इंग्लैंड के हॉस्पिटल फॉर सिक चिल्ड्रेन, ग्रेट ऑरमंड स्ट्रीट, लंदन गये; दुर्घटना एवं आपातकालीन सेवाओं के अध्ययन हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की फ़ैलोशिप पर संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा की; 1984 में उन्हें रॉयल मेडिकल कॉलेज ऑफ सर्जन्स, मेलबॉर्न में वैज्ञानिकों की जनरल मीटिंग में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। अमेरिका के सिएटल में 1982 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कैंसर कांग्रेस और 1983 में हॉलैंड, एम्सटर्डम में आयोजित द्वितीय युरोपियन कैंसर कांग्रेस में उन्होंने वैज्ञानिक शोध-पत्र पढ़े एवं 1989 में वे सोसायटी ऑफ सर्जन्स, पाकिस्तान द्वारा इस्लामाबाद में आमंत्रित किये गये।

उनका अंतिम कार्यकाल हरियाणा में मात्र तृतीयक देखभाल (Tertiary Care) एवं चिकित्सा-शिक्षण सुविधा के निदेशक के रूप में था, जहां उन्हें इस अस्पताल में बहुधा आने वाले शहरी गरीबों और किसानों के प्रति गहन चिंता रखने वाले एक उत्कृष्ट और कुशल प्रशासक के रूप में जाना गया। वह रोहतक में चिकित्सा कार्य, शिक्षण कार्य एवं शोध कार्य की शैली में एक बदलाव लाये एवं सक्षम आपातकालीन एवं बाह्य रोगी सेवाएं (ओपीडी) सहज सुलभ कराईं। यह उल्लेखनीय कार्य, जिसके लिए उन्हें हरियाणा के आम लोगों द्वारा व्यापक रूप से जाना गया, उस पैंतीस साल लम्बे मेडिकल, सर्जिकल एवं प्रशासनिक अनुभव का प्रतिफल था, जो उन्हें दिल्ली के प्रमुख अस्पतालों और डा. राममनोहर लोहिया अस्पताल में मेडिकल चिकित्सा अधीक्षक के पद पर रहते हुए हासिल हुआ।

कार्य

डा. सिंह का का जीवन व्यावसायिक कौशल, और सर्जिकल समस्याओं के समाधान को समर्पित रहा, जो भारतीय संदर्भ में विशिष्ट थीं। शल्यक्रिया विज्ञान में उनका मौलिक योगदान रहा, जिसे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली तथा विदेशों में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के मेडिकल जर्नल्स

में उनका प्रकाशन हुआ। गुर्दे की पथरी में उपयुक्त तकनीक के प्रयोग के उनके मौलिक शोध के लिए उन्हें प्रतिष्ठित 'हरिओम आश्रम प्रेरित अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

बचपन में जलने के घाव, हार्निया, शल्य चिकित्सोपयोगी पोषण एवं मलाशय बाहर आने से रोकने के लिए सुरक्षित ऑपरेशन की नई तकनीक ने शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में उन्हें विस्तृत पहचान उपलब्ध कराई। गुर्दे की पथरी एवं बड़ी आंत की वृद्धि सम्बंधी अध्ययन पर उनका योगदान भारतीय शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में एक मील का पत्थर हैं। लिवर में अमीबा-जन्य घाव पर उनका अध्ययन "अमेरिकन जर्नल ऑफ सर्जरी" में प्रकाशित हुआ था एवं 1990 में ब्रिटिश जर्नल ऑफ सर्जरी के एक सम्पादकीय में इस विषय पर एक बेंच मार्क स्टेटस के तौर पर इसका उल्लेख किया गया था। उनका शोध कार्य और पेशागत काम विशिष्ट रूप से भारत की स्वास्थ्य समस्याओं के उपचार से घनिष्ट रूप से जुड़ा हुआ था। उन्होंने उन्हें सरल, लागत-प्रभावी और हमारे देश की परिस्थितियों में आसानी से लागू किया जा सकने वाला बनाया, जिसके चलते उनके शोध सम्बंधी योगदान, विशेषकर भारतीय जनता की बीमारियों में काम के सिद्ध हो सके।

ये शोध उन गूढ नामों और प्रौद्योगिकी निवेशों के साथ दुर्लभ बीमारियों पर जोर देने वाले पाश्चात्य कार्यों की कार्बन-कॉपी होने से बहुत दूर हैं, जो भारतीय अस्पतालों एवं भारतीय रोगियों की पहुंच के बाहर होंगे।

डा. सिंह ने अपनी 40 साल की उत्कृष्ट चिकित्सकीय सेवाओं के दौरान समाज में लक्ष्य प्रतिष्ठित पहचान हासिल की और वे भारत के दो राष्ट्रपतियों के मानद शल्य चिकित्सक रहे एवं उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा 1991 में "पद्मश्री" से सम्मानित किया गया।

भारत के राष्ट्रपति द्वारा 1991 में डॉक्टर जयपाल सिंह को प्रदत्त पद्मश्री का प्रशस्ति-पत्र

सामाजिक जागरूकता के दुर्लभ गुण से सम्पन्न डा. जयपाल सिंह एक प्रख्यात शल्य चिकित्सक हैं, जिन्होंने भारतीय चिकित्सा जगत में अग्रगण्य के रूप में एक प्रमुख स्थान बनाया है।

हमारे देश की विशिष्ट स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान खोजने के लिए समर्पित होकर 13 मई 1930 को मेरठ के महो में जन्मे डा. जयपाल सिंह ने इर्विन हॉस्पिटल, डा. राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल, सफदरजंग अस्पताल एवं यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज में लगभग 35 वर्ष सेवाएं प्रदान कीं। उन्होंने स्नातक पूर्व एवं परास्नातक छात्रों को पढ़ाया एवं भारतीय समाज के सन्दर्भ में प्रासंगिक विषयों पर शोध करवाये। शल्य विज्ञान में उनके कई ऐसे मौलिक योगदान रहे, जिन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। बचपन में जलने के घाव, हार्निया, शल्य चिकित्सोपयोगी पोषण एवं मलाशय बाहर आने से रोकने के लिए सुरक्षित ऑपरेशन की नई तकनीक ने शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में उन्हें विस्तृत पहचान उपलब्ध कराई। गुर्दे की पथरी एवं बड़ी आंत की वृद्धि सम्बंधी अध्ययन पर उनका योगदान भारतीय शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में एक मील का पत्थर है। लिवर में अमीबा सम्बंधी फोड़े पर उनका हाल ही का काम अमेरिकन जर्नल ऑफ सर्जरी में प्रकाशित हुआ है।

वह सी.जी.एच.एस., डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल और सफदरजंग अस्पताल में वरिष्ठ सर्जन रहे हैं; सफदरजंग अस्पताल और राम मनोहर लोहिया अस्पताल में सर्जरी विभाग के प्रमुख रहे हैं; यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज, नई दिल्ली में सर्जरी के शिक्षक एवं प्रोफेसर रहे हैं; और डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली में चिकित्सा अधीक्षक एवं शल्य चिकित्सा विभाग के प्रमुख रहे हैं। सम्प्रति वह मेडिकल कॉलेज रोहतक में निदेशक, डीन, प्रोफेसर एवं शल्य चिकित्सा विभाग के प्रमुख हैं।

डा. जयपाल सिंह बाल शल्य चिकित्सा प्रशिक्षण हेतु कोलम्बो

प्लान फैलो के रूप में 1968 में यूनाइटेड किंगडम जा चुके हैं, वह विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की फैलोशिप पर आघात सेवा संगठन (ऑर्गेनाइजेशन ऑफ ट्रॉमा सर्विस), दुर्घटना एवं आपातकालीन विभाग के अध्ययन हेतु यूनाइटेड किंगडम और यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका भी जा चुके हैं। उन्हें भारत में “बड़ी आँत के कैंसर” पर विमर्श हेतु रॉयल आस्ट्रेलियन कॉलेज ऑफ सर्जन्स द्वारा मेलबोर्न में 1984 में आयोजित वैज्ञानिक मीटिंग में आमंत्रित किया गया था। उन्होंने 1982 में सिएटल, अमेरिका में आयोजित 13वीं इंटरनेशनल कैंसर कांग्रेस में भाग लिया एवं पेपर पढ़ा एवं 1983 में एम्सटर्डम, हॉलैंड में द्वितीय यूरोपियन कैंसर कांग्रेस में हिस्सा लिया। उन्हें 1989 में सोसायटी ऑफ सर्जन्स ऑफ पाकिस्तान द्वारा आमंत्रित किया गया, जहां उन्होंने “किडनी स्टोन्स” पर पेपर पढ़ा। 1990 में उन्हें एथेन्स में इंटरनेशनल गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी सर्जिकल क्लब द्वारा भी मीटिंग में आमंत्रित किया गया।

डा. जयपाल सिंह ने “मूत्र मार्ग पथरी के रोग निदान सम्बंधी पहलुओं और उनकी पुनरावृत्ति को रोकने के साधन” पर एक बड़ा आलेख लिखा, जिसके लिए उन्हें 1986 में “हरिओम आश्रम प्रेरित अवार्ड” प्राप्त हुआ। भारत में अनुक्रमित एवं प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में उनके सैकड़ों पेपर्स प्रकाशित हो चुके हैं।

डा. जयपाल सिंह

(13 मई 1930 – 24 सितम्बर 1997)

शिक्षा

1955 मास्टर ऑफ सर्जरी
1952 एम. बी. बी. एस.
(स्वर्ण पदक प्राप्त)

सा. ना. मेडिकल कॉलेज, आगरा
सा. ना. मेडिकल कॉलेज, आगरा

सांव्यावसायिक पद

- 1989–1992: हरियाणा में परास्नातक (पोस्टग्रेज्युएट) चिकित्सकीय शिक्षा व शोध के निदेशक एवं मेडिकल कॉलेज रोहतक, हरियाणा के प्रधानाचार्य।
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में चिकित्सा संकाय के डीन एवं सर्जरी के प्रोफेसर।
- 1986–1989: डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली में चिकित्सा अधीक्षक, परामर्शदाता एवं शल्य चिकित्सा विभाग के प्रमुख।
- 1980–1986: यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एवं शल्य चिकित्सा विभाग प्रमुख, सफदरजंग अस्पताल एवं राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली में भारत सरकार के शल्य चिकित्सा परामर्शदाता।
- 1971–1980: डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली में वरिष्ठ शल्य चिकित्सक।
- 1959–1971: द विलिंग्डन हॉस्पिटल, नई दिल्ली में शल्य चिकित्सक।
- 1955–1958: लेडी इर्विन हॉस्पिटल, नई दिल्ली में शल्य चिकित्सा विभाग में कुलसचिव।

शिक्षण अनुभव

- 1953–1955: क्लीनिकल ट्यूटर, एस.एन. मेडिकल कॉलेज, आगरा।
- 1955–1958: लेडी इर्विन हॉस्पिटल, नई दिल्ली, कुलसचिव (शल्य चिकित्सा)।
- 1959–1979: मानद सहायक प्रोफेसर एवं शल्य चिकित्सक, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज और विलिंग्डन हॉस्पिटल, नई दिल्ली।

1980—1986: प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज, सफदरजंग अस्पताल और डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली

विशेष प्रशिक्षण:

दि इंस्टीट्यूट ऑफ चाइल्ड हेल्थ, यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन एवं हॉस्पिटल फॉर सिक चिल्ड्रन, ग्रेट ऑरमंड स्ट्रीट, लंदन, डब्लू.सी.आई. लंदन में कोलम्बो प्लान के अन्तर्गत बाल शल्य चिकित्सा में प्रशिक्षित एवं कुल सचिव के रूप में कार्य किया।

यू.एस.ए. और यू.के. में आठ सप्ताह के लिए दुर्घटना तथा आपातकालीन सेवाओं के अध्ययन हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन की फैलोशिप।

पुरस्कार

वर्ष 1986 में अनुसंधान कार्य 'मूत्र मार्ग पथरी के रोग निदान सम्बंधी नवीनतम पहलुओं और उनकी पुनरावृत्ति को रोकने के साधन' के लिए आगरा में ए.एस.आई. वार्षिक सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ शोध कार्य की श्रेणी में प्रतिष्ठित 'हरिओम आश्रम प्रेरित अवार्ड' के प्राप्तकर्ता।

औषधि विज्ञान के क्षेत्र में सराहनीय सेवाओं के लिए भारत सरकार द्वारा 1991 में 'पद्मश्री' से सम्मानित।

संस्थाओं की सदस्यता

1. एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इंडिया
2. अध्यक्ष (और सदस्य) दिल्ली स्टेट चेप्टर ए.एस.आई.
3. युरोपियन कैंसर कांग्रेस
4. दिल्ली पीडिएट्रिक सर्जिकल क्लब

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन जहां पेपर प्रस्तुत किये

1. विश्व शिशु शल्य चिकित्सा कांग्रेस, बम्बई, 1980
(हार्नियोग्राफी एवं बच्चों में योनि प्रक्रियाओं की प्रत्यक्षता)
2. अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर कांग्रेस, सिएटल, यू0एस0ए0, 1982
(दक्षिण एशिया में बड़ी आंत का कैंसर और आंत की वृद्धि का अध्ययन)
3. 1983 में एम्सटर्डम, हॉलैंड में युरोपियन कैंसर कांग्रेस
(दक्षिण एशिया में बड़ी आंत की खराबी)

4. 1984 में रॉयल ऑस्ट्रेलियन कॉलेज ऑफ सर्जन्स की सामान्य वैज्ञानिक मीटिंग

प्रकाशन: संक्षेप में, गितगत 25 वर्षों में सम्मानित अनुक्रमित अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में लगभग 50 प्रकाशन। शोध एवं प्रकाशन के क्षेत्र थे— शिशु शल्य चिकित्सा, कैंसर विज्ञान एवं सामान्य शल्य चिकित्सा। कुछ चुनिंदा प्रकाशित आलेख में में दिये गये हैं।



करतारी देवी (बाएं से दूसरी) और उनकी बहू वेद वती (दाएं)। भडंगपुर गांव। १९७३

यह श्रद्धांजलि डा. जय पल सिंह की पत्नी वेद वती ने अपनी सास करतारी देवी की याद में २००४ में ग्राम भडंगपुर में किये भोज के अवसर पर लिखी थी

श्रीमती करतारी देवी

(१९०८ - २००४)

श्रीमती करतारी देवी का निधन ६६ वर्ष की दीर्घ आयु में १३ जनवरी २००४ को दिल्ली में हुआ। उनका जीवन संघर्ष भरा था, पर उन्होंने परिस्थितियों से कभी हार स्वीकार नहीं की। उनके जीवन पर एक दृष्टि डालने से पढ़ने वाले को गर्व की अनुभूति होगी, खासतौर पर आप सबको जो उनके करीब रहे या उनसे जुड़े रहे।

करतारी देवी मोदीनगर के करीब शेरपुर गांव से थीं। बचपन में माता-पिता का देहान्त हो गया। १२ वर्ष की आयु में हापुड़ जिले के भडंगपुर गांव के एक सम्मानित परिवार के पुत्र योगेन्द्र सिंह के साथ विवाह में बंध गयीं। संयोग से उनके पती के भी माता-पिता जीवित नहीं थे। पति के दादा वर्दी मेजर उमराव सिंह इलाके के रौबदार और सम्मानित व्यक्ति थे। उन्होंने अपने पौत्र योगेन्द्र सिंह में प्रतिभा के लक्षण देखे और उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। योगेन्द्र सिंह ने मेहनत से पढ़ाई करके अपने दादा की इच्छा को पूरा किया और १९२० में आगरा मेडिकल स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९५४ में स्थापित, आगरा मेडिकल स्कूल ब्रिटानिया फौज के लिए मेडिकल सहायक और डॉक्टर तैयार करते थे। योगेन्द्र सिंह ने १९२४ में डॉक्टर की डिग्री प्राप्त की और फौज में भर्ती हो गए।

करतारी देवी ने कक्षा ४ तक शिक्षा प्राप्त की थी, लेकिन उनकी विलक्षण स्मरण शक्ति और सीखने की इच्छा में बाधक नहीं हुई। उनकी छह संतानें हुईं, जिनमें दो ही बचीं। खराब स्वास्थ्य के कारण फौज से डा० योगन्द्र सिंह सेवानिवृत्त कर दिए गए और पैतृक गांव भारंगपुर में आ बसे। उच्च रक्त चाप की वजह से योगन्द्र सिंह जी शारीरिक श्रम नहीं कर सकते थे। बड़ी बेटी शीला की शादी हो चुकी थी, बेटा जय पाल हाई स्कूल के लिए मेरठ कालेज में पढ़ रहा था। यहीं से करतारी देवी का संघर्ष शुरू हुआ। ईख छोलना, गाय भैसों का चारा लाना और कटवाना, फसल की देखभाल, समय पर सिंचाई आदि किसानों के सभी कार्य इन्होंने किये। पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया और उनसे कम नहीं, बराबर या अधिक फसल उगाई। आस पास के गावों में उनका उदाहरण दिया जाता था।

पुत्र को १९४७ में आगरा मेडिकल कालेज में दाखिला मिला, लेकिन समस्या थी धन की। करतारी देवी ने निश्चय कर लिया कि अपने तेजस्वी पुत्र को किसी भी तरह से डाक्टर बनायेंगी। फिर चला जीवन चक्र – सुबह तीन बजे उठना और देर रात को बिस्तर पर जाना। बेटे को कभी भी किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी। इस दौरान १९५० में बड़ी बेटी शीला लखनऊ में उच्च रक्तचाप से प्रसव में जटिलताएं के कारण भगवान को प्यारी हो गयी। खैर पुत्र जयपाल सिंह ने पिता के डाक्टर बनने के ठीक २८ साल बाद उसी मेडिकल कॉलेज से गोल्ड मैडल लेकर १९५२ में डाक्टर बनकर माता के स्वपन को साकार किया, लेकिन यह सुख अधिक दिनों तक नहीं रहा। जय पाल के डाक्टर बनने के एक साल के अंदर पती योगेन्द्र सिंह की मृत्यु हो गयी और ४५ वर्ष की आयु में ही करतारी देवी विधवा हो गयीं। गांव में उनका आदर था, परिवार वाले उनकी हर बात मानते थे। उनके घर गाओं के अनेक जातियों के गरीब परिवारों के बच्चे हमेशा रहते थे। वेरात के उनके घर पर ही पढते थे और वहीं दुध पीकर सो जाते थे और सुबह को स्कूल चले जाते थे। वह पढ़ाई के मामले में बहुत ही सख्त थीं। नियम से पढ़ना, सफाई से रहना, अपना काम स्वयं करना, बड़ों का आदर करना बच्चों ने उनसे सीखा। बच्चा चाहे हरिजन का हो, जुलाहे का या बढ़ई का, उनके लिए सभी समान थे।

उनके बेटे जय पाल ने उनकी मेहनत की लाज रखी और एक कुशल सर्जन बनकर देश-विदेश में ख्याति प्राप्त की। माँ को बहुत गर्व था अपने बेटे पर, और बेटे को माँ से प्रेम और आदर। जय पाल भी अपने जीवन की सफलता का श्रेय अपनी माँ को देते थे। गाओं में सभी को विश्वास था कि अपनी माँ की बात वे कभी नहीं टालेंगे नहीं इसलिए कई लोग अपनी सिफारिश कराने के लिए उनकी माँ को साथ ले लाते थे। उनकी तीखी

आवाज के पीछे बहुत प्यार भरा था। बेटी-बहुओं पर सख्ती से नियमों का पालन करवाती थी पर कोई जोर-जबरदस्ती नहीं करती थी। उनकी बहू के साथ दहेज के नाम पर कुछ भी नहीं आया, पर उन्होंने अपनी बहू से कभी भी इसका जिक्र तक नहीं किया।

करतारी देवी एक परोपकारी, तीव्र बुद्धि वाली कर्मठ महिला थीं। भगवान से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति दें।

Dr. Jai Pal Singh

(13th May 1930 - 24th Sept 1997)

Dr. Jai Pal Singh was passionate both about education as well as excelling in it, having seen its transformative benefits in his life and career. His education at Agra Medical College catapulted him from the humble home of a self-cultivating small-holding peasant to national recognition as an outstanding surgeon and hospital administrator. He became the Medical Superintendent of the prestigious RM Lohia Hospital in Delhi in 1986, appointed Honorary Surgeon to the President of India, subsequently was the Director of Rohtak Hospital and Medical College in Haryana in 1989, awarded the prestigious *Hari Om Ashram Prerit Award* in 1986 and the *Padma Shri* in 1991.

Dr. J.P. Singh was committed to learning and teaching throughout his life, always encouraging the younger generation to excel at academics as the path to self-development and worldly success. His strong work ethic and sense of industry; attention to detail in all he did; his lifelong commitments to his village community, family, relatives and friends; his firm belief in his own capabilities to overcome the most adverse circumstances were the key attributes that made him an outstanding achiever.

His commitment to people of rural origin was remarkable – in the brief period when he did practice medicine privately between 1992 and 1995, he operated free on hundreds of poor from the villages. During his career, tens of thousands from rural India come to him at the hospitals he worked in for succor and assistance in times of medical and personal distress.

LIFE

Born 13th May 1930, Jai Pal Singh obtained his bachelor's medical degree in 1952 with a distinguished academic record from Sarojini Naidu Medical College, Agra (UP) – the prestigious institute from where his father (Late Dr. Yogendra Singh, a doctor with the British

Indian Army) graduated a generation ago. An outstanding Gold Medal student, Jai Pal was also the Sports Captain of his College in 1951-52 and member of the college hockey, football, tennis teams and the leader of the University theater club. After completing his post-graduate qualification in Surgery in 1955 with honors, he worked for over 40 years in Delhi and its neighbouring regions delivering quality and compassionate patient care and medical education to thousands. He blazed new directions in surgical research for the benefit of the masses, utilizing contemporary techniques from medicines and surgery as practiced in the West, modified to address the medical concerns of Indian society.

During his medical career spanning four decades, Dr Singh visited the United Kingdom as a Commonwealth Fellow in 1968 at the Hospital for Sick Children, Great Ormond Street London; the United States on a WHO Fellowship to study Accident and Emergency Services; was invited to the General Scientific Meeting of the Royal Australasian College of Surgeons in Melbourne in 1984; read scientific papers at the International Cancer Congress in Seattle USA in 1982 and in 1983 at the Second European Cancer Congress at Amsterdam, Holland; and was invited to Islamabad in 1989 by the Society of Surgeons of Pakistan.

Dr. Jai Pal Singh's last official position was as Director of Rohtak Hospital and Medical College and the only tertiary care and medical teaching facility in Haryana. He was widely acknowledged to be an outstanding and able medical administrator with an all-consuming concern for the urban poor and agriculturists who frequented this hospital. He introduced changes in the work ethic in medical personnel, teaching and research at Rohtak and carved out efficient emergency and outpatient services. This outstanding work, widely acknowledge by his primary audience the people of Haryana, was a culmination of the 35 years of medical, surgical and administrative experience he gained in Delhi's leading hospitals; including being the Medical Superintendent of the Ram Manohar Lohia Hospital.

WORK

Dr. Singh devoted his life and his professional skills in the understanding and management of surgical problems peculiar to India. He made original contributions to surgical science, which have gained national and international recognition and was published abroad in numerous medical journals of international repute. He was awarded the prestigious “*Hari Om Ashram Prerit Award*” for his original research on kidney stones using appropriate technology, and he was honored by his *alma mater* S. N. Medical College Agra with a lifetime achievement award as an outstanding alumni.

His work on childhood burns hernia, surgical nutrition and a new operation for prolapse of rectum secured for him wide recognition in general surgery. His contribution on kidney stones and motility studies on large intestines is a landmark in Indian surgery. His work on amoebic liver abscess was published in American Journal of Surgery and was mentioned in an editorial in British journal of Surgery in 1990, giving it a benchmark status on the subject. His research and professional work were intimately tied to the treatment of problems peculiar to India. He made them simple, cost effective and easily applicable to conditions in our country thereby relating his research contributions to diseases peculiar to Indian masses.

These are far away from being carbon copies of western works with emphasis on rare diseases with esoteric names and high technology inputs which would be out of reach for Indian hospitals and Indian patients.

Dr. Singh earned well-deserved recognition in society for his outstanding work in surgery during his 40 years of medical excellence and had the honor of being appointed as Honorary Surgeon to two Presidents of India and was honored by the “*Padma Shri*” by the President of India in 1991. The Association of Surgeons of India (ASI) holds an annual Oration in his honor: <https://asiindia.org/padma-shri-dr-jai-pal-singh/>

**CITATION OF THE *PADMA SHRI* CONFERRED
BY PRESIDENT OF INDIA IN 1991
ON DR. JAI PAL SINGH**

Endowed with a rare quality of social awareness, Dr Jai Pal Singh is an eminent surgeon who has carved for himself a prominent place as leader in the medical world of India devoted to finding solutions for the health problems peculiar to our country.

Born on May 13, 1930 at Mhow, Meerut (UP), Dr Jai Pal Singh has served for nearly 35 years in Irwin Hospital, Dr Ram Manohar Lohia Hospital, Safdarjung Hospital and University College of Medical Sciences. He has taught undergraduate and post-graduate students and conducted research on subjects of relevance to the Indian society. He has made many original contributions to surgical science, which have received national and international recognition. His work on childhood burns, hernia, surgical nutrition and new operation for prolapse of rectum has received wide recognition. His contribution on kidney stones and motility studies on large intestines are landmarks in Indian surgery. His recent work on amoebic liver abscess was published in American Journal of Surgery.

He has been Senior Surgeon in CGHS, Dr Ram Manohar Lohia Hospital and Safdarjung Hospital; Consultant in Surgery, CGHS; Head of Department of Surgery, Safdarjung Hospital and Dr Ram Manohar Lohia Hospital; Post-graduate Supervisor, Teacher and Professor of Surgery, University College of Medical Sciences, New Delhi; and Medical Superintendent & Head of Surgery department, Dr Ram Manohar Lohia Hospital, New Delhi. He is at present Director, Dean, Professor and Head, Department of Surgery, Medical College, Rohtak.

Dr Jai Pal Singh visited United Kingdom as a Colombo Plan fellow in 1968 for training in Pediatric Surgery. He has been to United Kingdom and United States of America on WHO Fellowship to study the organization of Trauma Service, Accident and Emergency Department. He was invited by Royal Australasian College of Surgeons to its scientific meeting held in Melbourne in 1984 to initiate discussion on “Large Bowel cancer” in India. He attended and read papers at the 13th International Cancer Congress in Seattle, USA in 1982, and also attended the second European Cancer Congress at Amsterdam, Holland in 1983. He was invited by the Society of Surgeons of Pakistan in 1989 for an international meeting where he read paper on ‘Kidney Stones’. He was also invited by International Gastroenterology Surgical Club to its meeting at Athens in 1990.

Dr Jai Pal Singh has written a treatise on “Newer Aetiological aspects of Urinary calculi and means of preventing their recurrence”, which secured him Hari Om Ashram Prerit Award in 1986. He has published more than three score papers in indexed journals in India and in international journals of repute.

DR. JAIPAL SINGH(13th May 1930 - 24th Sept 1997)**Education:**

1955 Master of Surgery	S. N. Medical College, Agra
1952 M.B.B.S. (Gold Medallist)	S. N. Medical College, Agra

Professional Career Positions:

1989-1992	Director of Post-Graduate Medical Education and Research, Haryana and Principal Medical College Rohtak, Haryana. Dean of Medical Faculty & Professor of Surgery, M.D. University, Rohtak
1986-1989	Medical Superintendent, Consultant and Head of the Department of Surgery, Dr Ram Manohar Lohia Hospital, New Delhi
1980-1986	Professor and Head of Department of Surgery at University College of Medical Sciences, University of Delhi and Consultant of Surgery, Government of India at Safdarjung Hospital and Dr Ram Manohar Lohia Hospital, New Delhi
1971-1980	Senior Surgeon, Dr Ram Manohar Lohia Hospital, New Delhi
1959-1971	Surgeon, The Willingdon Hospital, New Delhi
1955-1958	Registrar in Surgery, Lady Irwin Hospital, New Delhi.

Teaching Experience:

1953-1955	Clinical Tutor, S.N. Medical College, Agra
1955-1958	Registrar (Surgery), Lady Irwin Hospital, New Delhi
1959-1979	Honorary Assistant Professor of Surgery, Lady Hardinge Medical College and The Willingdon Hospital, New Delhi (Supervisor for Master of Surgery since 1968)
1980-1986	Professor, University of Delhi at University College of Medical Sciences, Safdarjung Hospital and Dr. Ram Manohar Lohia Hospital, New Delhi

Special Training: Trained in Paediatric Surgery under the Colombo Plan in London (UK) in the Institute of Child

Health, University of London and Hospital for Sick Children, Great Ormond Street, London, W.C.I. and worked as a Registrar.

WHO Fellowship to study Accident & Emergency Services in USA and UK for 8 weeks.

Awards:

Recipient of the prestigious “*Hari Om Ashram Prerit Award*” announced at the Annual Conference of A.S.I. at Agra for the best piece of Surgical Research for the year 1986 on “Newer Aetriopathological aspects of Urinary Calculi and means of preventing their recurrence’

Conferred “*Padma Shri*” by the Government India, 1991 for meritorious services in the field of medicine.

Membership of Societies:

1. Association of Surgeons of India
2. President (and Member) Delhi State Chapter A.S.I
3. International Cancer Congress
4. European Cancer Congress
5. Delhi Paediatric Surgical Club

International Conferences where papers were presented

1. World Pediatric Surgical Congress at Bombay, 1980 (Herniography and Patency of Processus Vaginalis in children)
2. International Cancer Congress in Seattle, USA, 1982 (Large bowel cancer and gut motility studies in South Asia)
3. European Cancer Congress at Amsterdam, Holland, 1983 (Large bowel malignancy in South Asia)
4. General Scientific meeting of Royal Australian College of Surgeons in Melbourne, 1984

Publications: In summary, about fifty publications in respected indexed international journals over twenty-five years. Field of Research & Publication was Pediatric Surgery, Oncology, Urology and general surgery. A select number are as provided in the Annexure.

ANNEXURE : SELECT PUBLICATIONS
BY DR. JAI PAL SINGH, M.S.

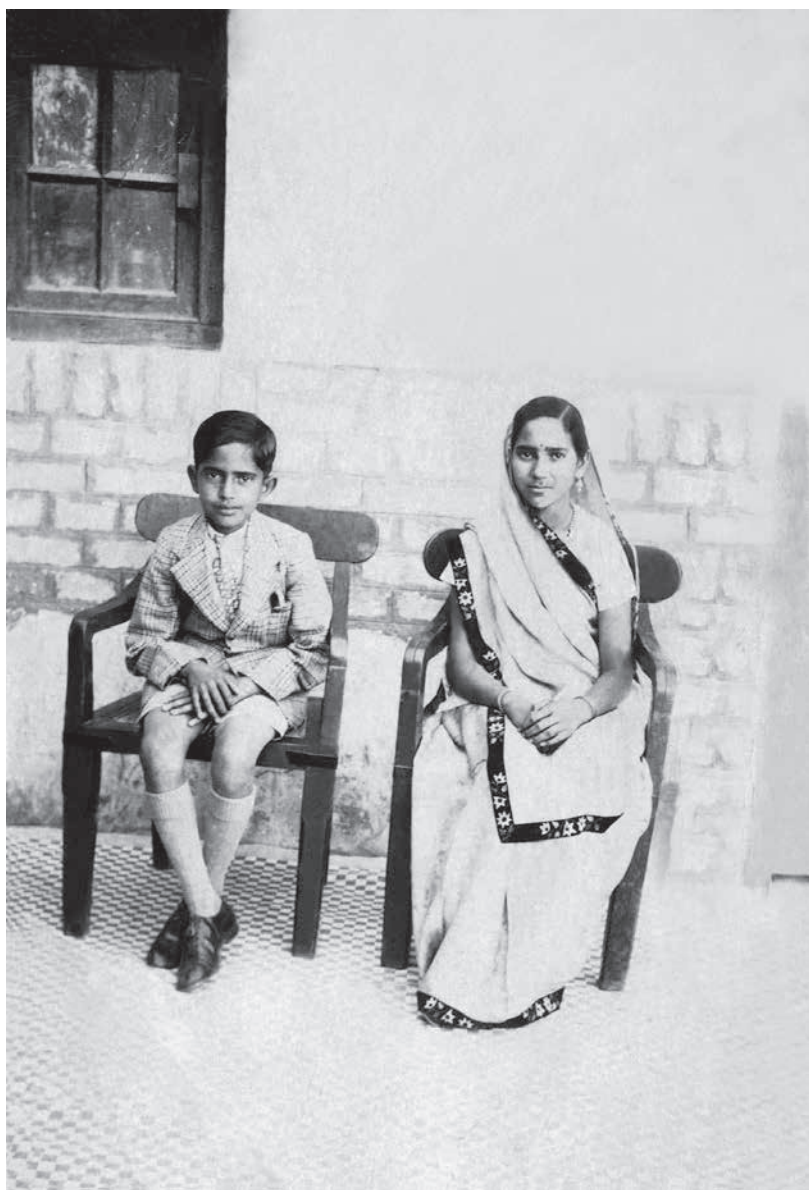
1. Crosse Renal Ectopia_British journal of Urology Vol.XXXV No 1 March 1963
2. Large bowl Malignancy – epidemiology and gut motility studies in South Asia-disease of colon and Rectum
3. Complete duplication of bladder and urethra-A case report with review of Literature-Journal of Urology Vol.109 March
4. Horse Shoe Kidney – Indian Pediatrics – March 1968
5. Neonatal Cervical Tearoom – (A case report) – Indian Paediatrics Vol. IX No.4 April 1972
6. Evaluation of Herniography Techniques in Paediatrics Surgical cases- India pediatrics VOL. XI No 11
7. Herniography and Inguinal Hernia in childhood-A study of 100 cases-India paediatrics Vol. XI No 11
8. Prediction value of clinical parameters in detecting unsuspected potency of processes vaginalis-India Paediatrics Vol. XVI No 5
9. Pneumoperitoneum as an aid to detect patent processes vaginalis requiring surgical closure-India Paediatrics Vol.18 Nov 1981
10. Congenital hemihypertrophy (report of two cases0 – India Journal of Child Health
11. Intestinal obstruction in children due to Ascariasis-Indian journal of Child Health
12. Mumps pancreatitis (a case report) – Indian journal of Child Health
13. Primary Omental Torsion in children-Indian journal of Surgery, Vol XXV No 6, 1963
14. Enterolithiasis in blind intestinal loops-Indian journal of surgery Vol 32 No 6 1970
15. Role of Carotid Angiography in Head injury-Indian Journal of surgery Vol 32 No6 1970
16. Appendicular Calculi-Indian journal of surgery Vol 32 No6 1970
17. Bleeding Jejunal Diverticulum- (A case report) –Indian journal of Surgery Vol.46 No 1, Jan 1984
18. Primary Hydatid Cyst of spleen- (A case report0 Surgical journal of Delhi
19. Cystadenocarcinoma of Head of pancreas- (A case report) Surgical journal of Delhi
20. Primary Lympho sarcoma of Transverse colon-Surgical Journal of Delhi
21. Urinary tract infection –Journal of Indian Medical Associan-Vol 48 No 6, March 1967
22. Abdomino-scrotal Hydrocels -The Medicine and Surgery Dec 1970
23. Burkitt's Lymphoma without Jaw involvement-Indian Journal of cancer-June 1972
24. Hepatopulmonary Hydatid disease- (A case report) Pediatric Surgery – September 24, 1'991
25. Lower Pole Divergence of Kidney; A new surgical technique to prevent Recurrent Renal Calculas-International Urology Nephrology 1989
26. Feeding Jejunostomy in post-operative nutrition-Indian journal of Surgery Vol. 51 No2, Feb 1989
27. Modern management of Head injuries-Asian Archives of Anesthesiology and Resuscitation Vol XXV No 2, 1986
28. Role of fine needle aspiration Cytology in the diagnosis of tubercular Lymphadenities-Indian journal 1989
29. Isolated hepatic tuberculosis with scrofuloderma-Postgraduate Medical Journal 1987
30. Appendicular Calculi-Indian journal of Surgery Vol.33, No10, 1971
31. Comparative evaluation of Percutaneous catheter Drainage of Resistant Amebic Liver Abscesses- The American journal of surgeryVol.158, July1989
32. Surgical Treatment of complete Prolapse Rectum in Childhood by Posterior Rectal wall stiffening-Indian journal of Colo-Proctology Vol.5, No1, Jan 1990

PHOTOGRAPHS

1940-1994



Jai Pal. c. 1940



Jai Pal with elder sister Sheela, c. 1940

Jai Pal loved and looked up to his sister, who sadly died at 25 in childbirth in Lucknow in 1950. He remained specially fond of his niece Manju and her family.



Sister Sheela, mother Kartari Devi and Jai Pal. 1940

AN ENGLISH VERSION OF THE ORIGINAL DIPLOMA, WHICH IS IN HINDI SCRIPT.

Roll No. 23



Bachelor of Medicine and Bachelor of Surgery

This is to Certify that Jai Pal Singh
S.N. Medical College, Agra

obtained the Degree of **Bachelor of Medicine and Bachelor
of Surgery** in this University in the Examination of 1952.

The subjects in which he passed the requisite examinations were:

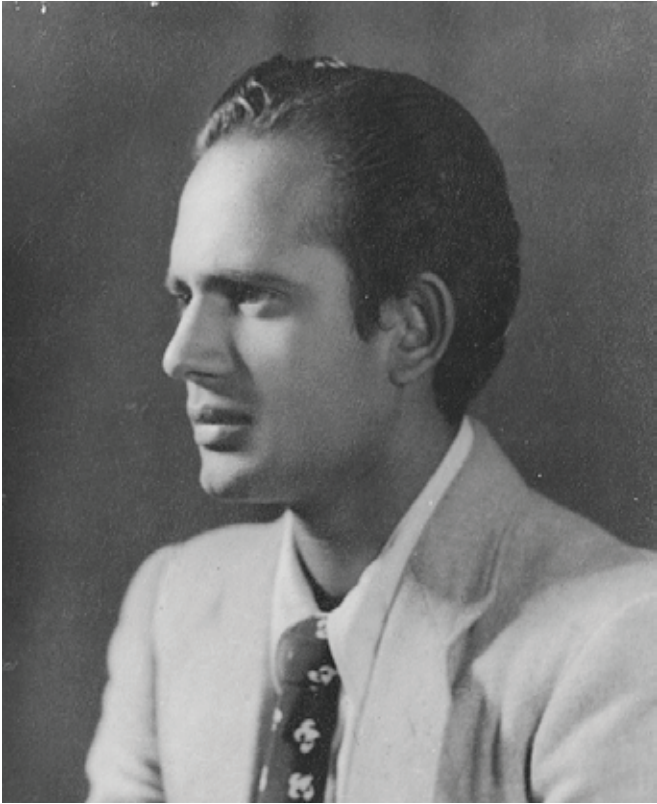
- (1) Anatomy (2) Physiology (3) Pharmacology, including Materia Medica,
Pharmacy and Pharmacological Therapeutics (4) Pathology and Bacteriology (5) Hygiene
and Public Health (6) Medical Jurisprudence and Toxicology (7) Medicine (8) Surgery
(9) Obstetrics and Gynaecology, and (10) Ophthalmology.

Countersigned:

[Signature]
Vice-Chancellor


Agra University :
The 6th December, 1952.

Sd. *C. Mahajan*
Vice-Chancellor.



Dr. Jai Pal Singh. 1953

Sarojini Naidu Medical College, Agra



No. 15416

OFFICE OF THE PRINCIPAL,
SAROJINI NAIDU MEDICAL COLLEGE.

Agra the 15-7-1954

Certified that Sri Jaipal Singh

was a student of the Sarojini Naidu Medical College
from August, 1947, to April, 1952,
when he/she qualified.

His/Her character was— Good

His/Her career— Admitted in August, 1947.

Passed 1st M.B.B.S., Examination in April, 1949 and
stood 8th out of 41 regular passed candidates.

Passed 2nd M.B.,B.S. Examination in April, 1950 and
stood 6th out of 35 regular passed candidates.

Passed Final M.B.,B.S. Examination Part I in April, 1951
and stood 19th out of 34 regular passed candidates.

Passed Final M.B.,B.S. Part II Examination in April, 1952
and stood 10th out of 28 regular passed candidates.

Seth Lalramal Benara Jain Golden Medal for Ophthalmology for
standing 1st at the University Examination - 1951-52.

Dr. Sahab Dr. Iqbal Raj Singh Silver Medal for Ophthalmology
for standing 1st at the University Examination 1951-52.

Special remarks if any—

He was member of the 1st eleven in hockey
foot-ball and was a member of the 1st
net in Tennis during his stay in the College.
Sports Captain - 1951-52.

C. B. Singh
MB., F.R.C.S.,

PRINCIPAL,

Sarojini Naidu Medical College, Agra.

Measures/-

S. N. Medical College Agra Certificate for Jai Pal Singh, 1954

Jai Pal was an outstanding student and a popular figure, excelling in University sports and theater.



Master of Surgery

This is to Certify that Jaipal Singh
(AGRA MEDICAL COLLEGE, AGRA)
 has been admitted to the Degree of **Master of Surgery** in this University at the Convocation of 1955.

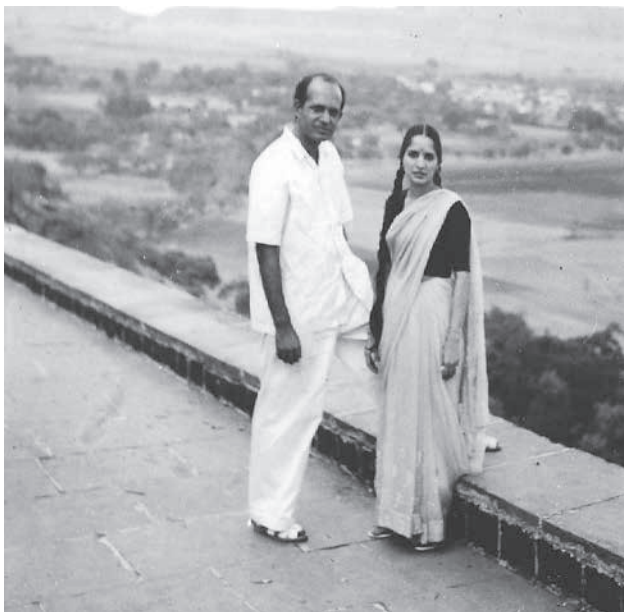
He offered SURGERY as the Special branch and the subject of his thesis was "BIOCHEMICAL STUDIES IN CHRONICALLY ILL SURGICAL PATIENTS."

Agra University:
 The 19th November, 1955.

Countersigned

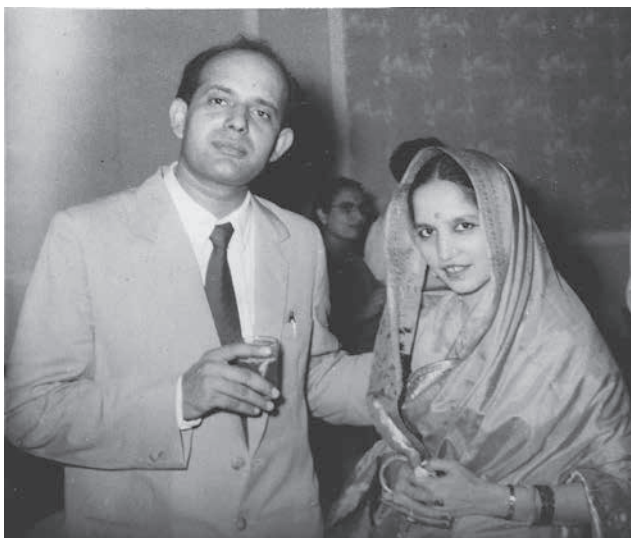
 Vice-Chancellor

sd. C. V. Mahajan
 Vice-Chancellor



Jai Pal Singh and Ved Wati, 1955

They married in 1958 after many years of courtship, against the wishes of the extended family. Jai Pal and Ved became close confidants of Ved's parents Chaudhary Charan Singh and Gayatri Devi when the latter moved to Delhi in 1976. Ved and Jai Pal remained committed caregivers to their parents till their passing.



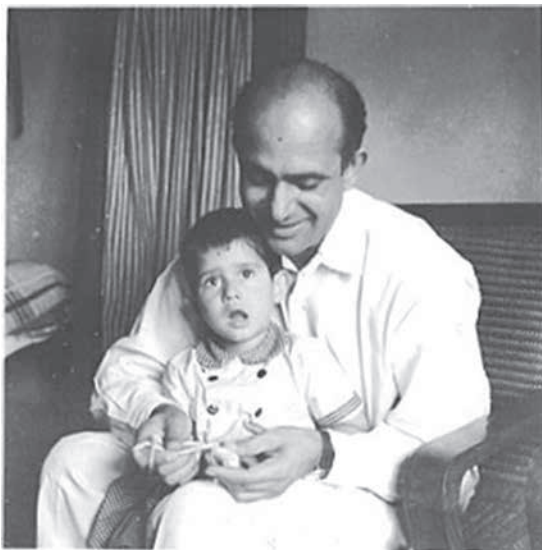
Jai Pal Singh and Ved Wati, 1958



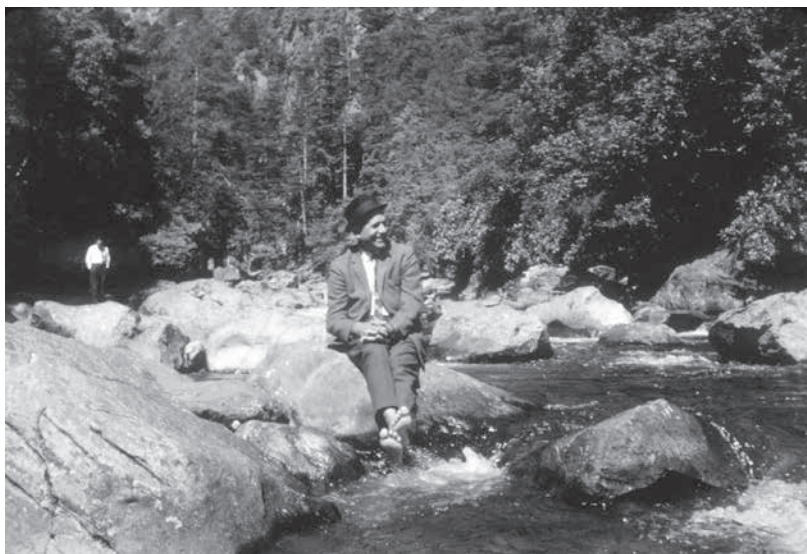
Jai Pal Singh and Ved Wati, 1958



Ved Wati with elder son Harsh and Jai Pal Singh.
1 December 1960



Jai Pal Singh with son Harsh, 1964



Dr. Jai Pal Singh in rural England, 1968

Talented, intelligent, intense, hard-working and able to turn on his considerable charm when he wanted. Dr. Jai Pal Singh had a successful stay in the United Kingdom on a Colombo Plan Fellowship during 1968-69. His Queen's English was fluent, surprising for someone who studied in Hindi and Urdu across 14 schools.



Jai Pal Singh with Ved Wati (right), Rashmi (left), Harsh (rear) and Ashish (right). February 1969

Loving husband, son, son-in-law, father, uncle, cousin, grandfather and friend.
Jai Pal Singh was ruled entirely by his large and fiery heart.



Dr. Jai Pal Singh with mother Kartari Devi, Ved Wati, sons Harsh and Ashish. Village Bharangpur, Hapur, 1973

Dr. Jai Pal Singh made sure his children spent many months each year with his mother away from the comfort of the city to enable them appreciate village life. Kartari Devi was 'Daktarni' to all as she was both wife and mother of a doctor – the village community was her life. She had no desire to leave the village, but was clear her grandchildren should study and seek a life in the city in urban occupations.

When she crossed 80, she finally moved to Delhi with Jai Pal and Ved and lived till 96. She experienced the death of her dear Jai Pal of cancer in 1997, a shock she never recovered from.



Jai Pal Singh and Ved Wati with sons Ashish and Harsh at 41 Rabindra Nagar, New Delhi. 1977



Jai Pal Singh with son Harsh at 41 Rabindra Nagar, New Delhi. 1977



Chaudhary Charan Singh and Gayatri Devi with Jai Pal Singh, Surajkund, Haryana, 1978



Prime Minister Chaudhary Charan Singh and Gayatri Devi at Ramlila in Delhi with Ved Wati and Jai Pal Singh, 1979



Jai Pal Singh with Neha and his brothers and uncles
in village Bharangpur, District Hapur, Uttar Pradesh, 1985

Dr. Jai Pal Singh was specially considerate to villagers as he understood the bias in the city. Hundreds of uncles, cousins, nieces, nephews, and villagers at large benefited from his medical care. He provided financial assistance where he could, helped scores of rural youth obtain secure jobs and had nieces stay with them in Delhi till he and Ved had them married.



Jai Pal Singh with Rashmi, sons Siddarth & Raghav. USA, 1985



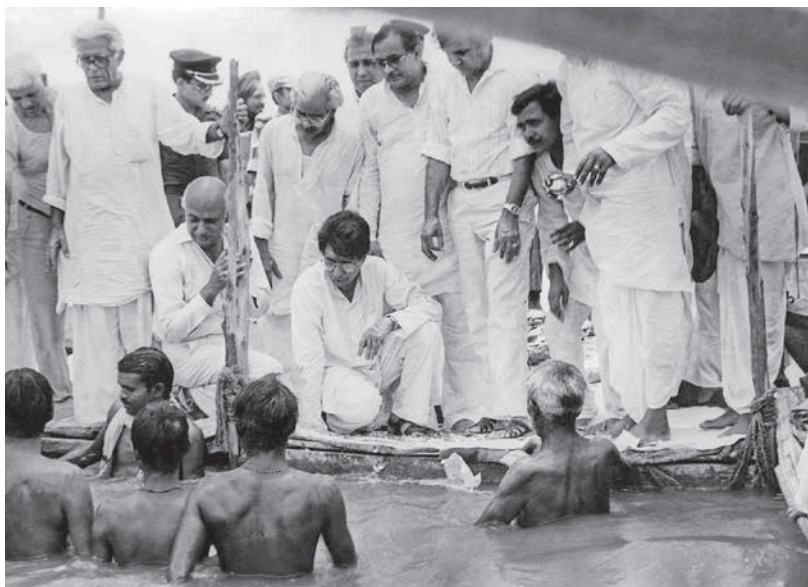
51 Lodhi Estate, New Delhi. 1985

Dr. Jai Pal Singh enjoyed the markers of career success, such as this sprawling bungalow in the heart of Lutyens Delhi. Rough-hewn villagers were always welcomed with open arms.



Dr. Jai Pal Singh as Medical Superintendent of Dr. Ram Manohar Lohia Hospital, New Delhi, 1987

Dr. Singh's hallmarks were his passion, work ethic, scrupulous honesty, and desire to excel in whatever he did.



Jai Pal Singh with Ajit Singh immersing Chaudhary Charan Singh's ashes at Ganga river, 30 May 1987



Padma Awards 1991 Investiture Ceremony

AT
RASHTRAPATI BHAVAN
NEW DELHI
ON
23rd & 24th MARCH 1991
2nd and 3rd CHAITRA, 1913 (SAKA)



432

भारत के राष्ट्रपति
द्वारा

पद्म विभूषण, पद्म भूषण, पद्म श्री तथा सम्मान प्रमाण-पत्र
प्रदान किये जाने के अवसर पर आयोजित
सम्मान समारोह में
शनिवार, 02 चैत्र, 1913 शक (23 मार्च, 1991) को प्रातः 10-00 बजे
राष्ट्रपति भवन में
श्री हर्ष लोहित की
उपस्थिति प्राथित है।

कृपया प्राप्य सूचना दें
निर्माण अनुभाग,
दूरभाष : 3012960, 3015321/4229

पंशाक : राष्ट्रीय/आपचारिक
आपसे प्रातः 9-30 बजे तक पहुँचने का अनुरोध है।



Dr. Jai Pal Singh's Padma Shri



PADMA SHRI

DR. JAI PAL SINGH

Endowed with a rare quality of social awareness, Dr. Jai Pal Singh is an eminent surgeon who has carved for himself a prominent place as leader in the medical world of India devoted to finding solutions for the health problems peculiar to our country.

Born on May 13, 1930 at Mhow, Meerut (U.P.), Dr. Jai Pal Singh has served for nearly 35 years in Irwin Hospital, Dr. Ram Manohar Lohia Hospital, Safdarjang Hospital and University College of Medical Sciences. He has taught undergraduate and post-graduate students and conducted research on subjects of relevance to the Indian society. He has made many original contributions to surgical science which have received national and international recognition. His work on childhood burns, hernia, surgical nutrition and a new operation for prolapse of rectum has received wide recognition. His contributions on kidney stones and motility studies on large intestines are landmarks in Indian surgery. His recent work on amoebic liver abscess was published in American Journal of Surgery.

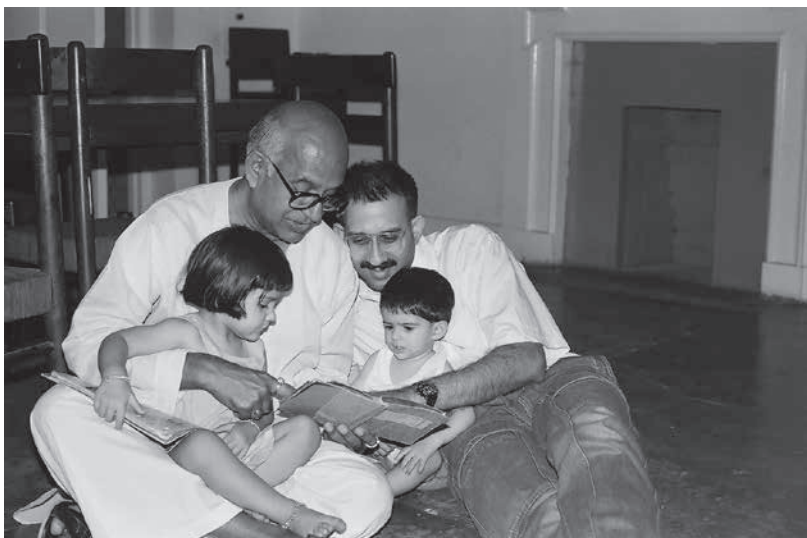
He has been Senior Surgeon in CGHS, Dr. Ram Manohar Lohia Hospital and Safdarjang Hospital; Consultant in Surgery, CGHS; Head of the Department of Surgery, Safdarjang Hospital and Dr. Ram Manohar Lohia Hospital; Post-graduate Supervisor, Teacher and Professor of Surgery, University College of Medical Sciences, New Delhi; and Medical Superintendent & Head of Surgery Department, Dr. Ram Manohar Lohia Hospital, New Delhi. He is at present Director, Dean, Professor and Head, Department of Surgery, Medical College, Rohtak.

Dr. Jai Pal Singh visited United Kingdom as a Colombo Plan Fellow in 1968 for training in Paediatric Surgery. He has been to United Kingdom and United States of America on a WHO Fellowship to study the organisation of Trauma Service, Accident and Emergency Department. He was invited by Royal Australasian College of Surgeons to its scientific meeting held in Melbourne in 1984 to initiate discussion on 'Large Bowel Cancer' in India. He attended and read papers at the 13th International Cancer Congress in Seattle, U.S.A. in 1982, and also attended the second European Cancer Congress at Amsterdam, Holland in 1983. He was invited by the Society of Surgeons of Pakistan in 1989 for an International meeting where he read a paper on 'Kidney Stones'. He was also invited by International Gastroenterology Surgical Club to its meeting at Athens in 1990.

Dr. Jai Pal Singh has written a treatise on 'Newer Aetiopathological aspects of Urinary calculi and means of preventing their recurrence', which secured him Hari Om Ashram Premit Award in 1986. He has published more than three score papers in Indexed journals in India and in international journals of repute.



At the Central Hall of Parliament in Delhi on the unveiling
of the portrait of Chaudhary Charan Singh.
Son Harsh with Jai Pal Singh. 23 December 1993



Jai Pal Singh with Harsh, grandson Zayn, grand-daughter Surabhi. 22 April 1993



Ved Wati and Jai Pal Singh. 1994

In love since 1951, Ved and Jai Pal married in 1958. They remained committed to each other till his passing in 1997. Ved lived another 15 years till she was 82, and went in 2012 pining for her Jai.

डॉक्टर जय पाल सिंह

(१३ मई १९३० – २४ सितंबर १९९७)

जय पाल सिंह पश्चिमी उत्तर प्रदेश के भड़ंगपुर गांव में एक मेहनतकश किसान समुदाय में योगेंद्र सिंह और करतारी देवी को पैदा हुए। अपनी कार्य नैतिकता और उत्कृष्टता की इच्छा ने उन्हें गांव की मिट्टी की झोपड़ियों से उच्च कोटी के विख्यात सर्जन, चिकित्सा शिक्षक और अस्पताल प्रशासक के रूप में राष्ट्रीय पहचान दिलाई। डॉ. जय पाल सिंह ने १९५५ में सरोजिनी नायडू मेडिकल कॉलेज, आगरा से एम.बी.बी.एस. और एम.एस. (स्वर्ण पदक) प्राप्त किया, जहां वे खेल और रंगमंच में अग्रसर रहे। उन्होंने दिल्ली और हरियाणा में ४० से अधिक वर्षों तक कार्य किया और हजारों लोगों को गुणवत्तापूर्ण और अनुकंपा रोगी देखभाल और चिकित्सा शिक्षा प्रदान की। डॉ. सिंह ने भारतीय समाज की चिकित्सा संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए उपयुक्त रूप से संशोधित पश्चिम में प्रचलित समकालीन सर्जिकल तकनीकों का उपयोग करते हुए जनता के लाभ के लिए सर्जिकल अनुसंधान में नई दिशाओं की शुरुआत की।

जय पाल सिंह के पिता १९५० में मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेने के कुछ समय बाद निधन हो गया। उनकी माँ करतारी देवी ने अपनी छोटी इकाई से उनकी शिक्षा के लिए पैसे बचाये जिसको जय पाल ने हमेशा प्रेम और कृतज्ञता से याद किया। डॉ. सिंह १९८६ में दिल्ली में प्रतिष्ठित भारत सरकार द्वारा प्रबंधित राम मनोहर लोहिया अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक बने, दो बार भारत के राष्ट्रपति के मानद सर्जन नियुक्त किए गए, १९८६ में प्रतिष्ठित हरिओम आश्रम प्रेरणा पुरस्कार से सम्मानित किये गए, १९८९ में हरियाणा के रोहतक अस्पताल और मेडिकल कॉलेज में निदेशक और डीन नियुक्त हुए, और चिकित्सा के प्रति उनकी जीवन भर की प्रतिबद्धता को भारत के राष्ट्रपति द्वारा मान्यता दी गई, जिन्होंने उन्हें १९९१ में पद्म श्री की उपाधि से सम्मानित किया। एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इंडिया उनके सम्मान में एक वार्षिक व्याख्यान आयोजित करता है – <https://asiindia.org/padma-shri-dr-jai-pal-singh/>

जय पाल सिंह की जीवन साथी वेद वती (चौधरी चरण सिंह और गायत्री देवी की पुत्री) का २०१२ में निधन हो गया। आज उनके परिवार में पुत्रियां रश्मि, नेहा और पुत्र हर्ष और आशीष हैं।

Dr. Jai Pal Singh

(13 May 1930 - 24 Sept 1997)

Jai Pal Singh's work ethic and desire for excelling in all he did took him from the mud-huts of a peasant community in village Bharangpur in Western Uttar Pradesh to national recognition as an outstanding surgeon, medical educator and hospital administrator. Dr. Jai Pal Singh obtained an MBBS and MS (Gold Medal) in 1955 from SN Medical College, Agra where he was also prominent in sports and theater. He worked for over 40 years in Delhi and Haryana delivering quality and compassionate patient care and medical education to thousands. Dr. Singh blazed new directions in surgical research for the benefit of the masses, utilizing contemporary surgical techniques practiced in the West suitably modified to address the medical concerns of Indian society.

Jai Pal Singh's father Yogendra Singh passed away in 1950 soon after he had enrolled in medical college, and he always remembered with fondness and gratitude his mother Kartari Devi toiling to save money for his education. Dr. Singh rose to become the Medical Superintendent of the prestigious central Indian government managed RML Hospital in Delhi in 1986, was appointed Honorary Surgeon to the President of India twice, awarded the prestigious Hari Om Ashram Prerit Award in 1986, appointed the Director & Dean of Rohtak Hospital and Medical College in Haryana in 1989, and his life-long commitment to medicine was recognised by the President of India who awarded him the Padma Shri in 1991. The Association of Surgeons of India (ASI) holds an annual Oration in his honor <https://asiindia.org/padma-shri-dr-jai-pal-singh/>

His life-partner Ved Wati, daughter of late Chaudhary Charan Singh and Gayatri Devi, passed away in 2012. They are survived by daughters Rashmi and Neha, sons Harsh and Ashish.